Date
~~00.04.0009~~
~~19.08.2022~~

B.A part (Hons) - I
Subject - HISTORY
Dr Deepak kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Date - 19.02.2022 Deptt of History
S.R.A.P College, Chakiya

स्थापत्य की बेसर शैली

भौगोलिक दृष्टि से बेसर शैली का क्षेत्र विन्ध्य क्षेत्र से लेकर कृष्णा नदी तक फैला हुआ था। नागरशैली एवं द्रविड़ शैली के बीच क्रमिक सामंजस्य के परिणाम स्वरूप बेसर शैली का विकास हुआ। बेसर शैली का आरंभिक आधार चालुक्य कला ने तैयार किया। चालुक्य कला के अन्तर्गत नागर एवं द्रविड़ दो भिन्न शैलियों में बनाए गए आगे दोनों को मिलाकर बेसर मंदिर शैली का विकास हुआ

चालुक्यों के अधीन एहोल, बदामी एवं पट्टदकल तीन महत्वपूर्ण निर्माण केन्द्र थी इस काल के महत्वपूर्ण मंदिर में हम विरुपाक्ष मंदिर तथा पापनाथ के मंदिर को ले सकते हैं। विरुपाक्ष मंदिर पर द्रविड़ शैली के निर्मित है जबकि पापनाथ मंदिर पर द्रविड़ शैली का भी प्रभाव देखा जा सकता था। आगे बेसर शैली का विकास साथ-साथ नागर शैली का भी प्रभाव देखा उत्तर वर्ती चालुक्यों के अधीन देखा गया। तत्पश्चात होयसल कला के रूप में विकसित हुआ। होयसल कला में ही बेसर शैली की महत्वपूर्ण विशेषताएं उभर कर आई।

बेसर शैली की निम्न लिखित विशेषताएं थी :-

(1) मंदिर अपने आकार में बहुकोणीय होता था। इसका मौलिक स्वरूप द्रविड़ शैली से प्रभावित होता था।

की कुछ विशेषताओं का ... लिया गया। ...
लिए द्रविड़ शैली के अनुसार बेसर शैली के मंदिरों
में स्तम्भ, विमान तथा मण्डप का प्रयोग होता था
किन्तु नागर शैली के प्रभाव में मंदिर के विमान
में ताख का नियोजन होता था। उसी प्रकार
नागर शैली के प्रभाव में ही प्रदक्षिणा पथ मंदिर के
छत से बाहर निर्मित किया जाता। इसके अतिरिक्त
नागर शैली के प्रभाव में ही मंदिर की दिवारों
पर रथ का नियोजन किया जाता था।

चित्र

Fig-1

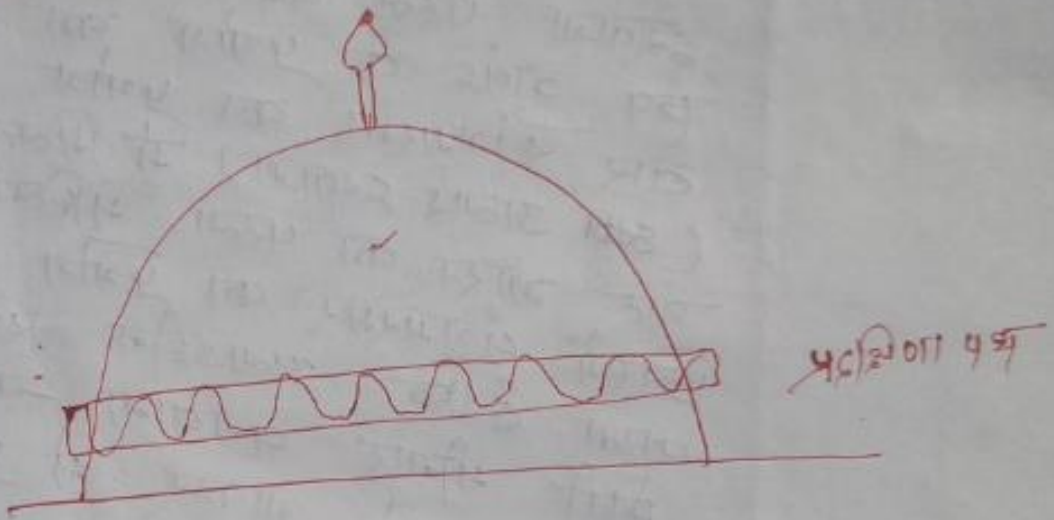

Fig-2

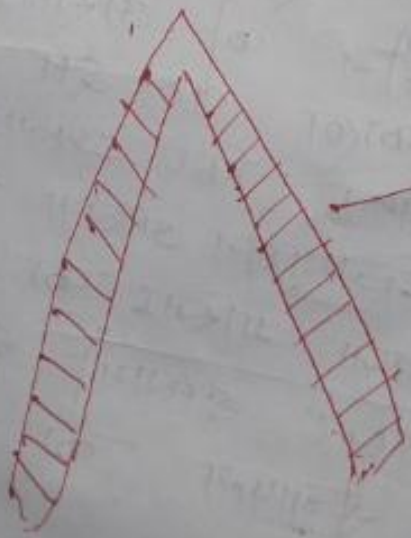

Date
19.02.2021

B.A (Hons) part III
Sub – HISTORY
Dr Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.R.A.P College, Chakiya.

खलजी स्थापत्य

खिलजी काल में चलकर मेहराबी शैली कुछ और भी व्यक्त हुई। बताया जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित अलाई दरवाजा पहले वैज्ञानिक प्रकार के मेहराब एवं गुंबद के प्रयोग का उदाहरण है। पहली बार संगमरमर का प्रयोग भी इसी स्थापत्य (अलाई दरवाजा) में मिलता है। अर्थात यह भारत का पहला मुस्लिम स्थापत्य है जिसमें संगमरमर का प्रयोग हुआ था। बताया जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने एक ऐसी मीनार बनवाना चाहा जो कुतुब मीनार से आकार में दुगुना हो लेकिन अलाउद्दीन की असमय मृत्यु हो जाने के कारण वह इस कार्य को पूरा नहीं कर सका। फिर अलाउद्दीन खिलजी ने ही निजामुद्दीन औलिया के दरगाह पर जमायत-ए-खाना मस्जिद का निर्माण कराया था। यह मस्जिद इस्लामी सिद्धांतों पर निर्मित प्रथम स्थापत्य का उदाहरण है।

तुगलक स्थापत्य

पूर्वकाल की तुलना में तुगलक स्थापत्य में मेहराबी शैली तथा शहतीरी शैली के बीच बेहतर समायोजन देखने

को मिलता है।

गयासुद्दीन तुगलक तथा मुहम्मद बिन तुगलक के स्थापत्य में ढलवा दिवारों का प्रयोग हुआ है इन्हें सलामी (Batter) कहा जाता था। गयासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद की स्थापना किया तो MBT ने जहाँपनाह नामक नगर का निर्माण कराया। MBT के स्थापत्य में मेहराबी तथा शहतीर शैली के बीच बेहतर सामंजस्य लाकर चतुष्कोणीय मेहराब का निर्माण किया गया। यह शैली अकबर के अधीन फतेहपुर सिकरी के स्थापत्य में अपनाई गई।

अगर हम फिरोजशाह तुगलक के स्थापत्य पर नजर डालते है तो हमें ज्ञात होता है कि उसके स्थापत्य पर ढलवा दीवार अथवा सलामी का उपयोग नहीं हुआ है किन्तु सजावट के लिए कमल का उपयोग हुआ है